DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Bara Chakia
BRABU – Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part-I
Subject – Sanskrit
Paper — I

5×3 = 15 Marks

# कारक-सूत्र व्याख्या

30. प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः (1/4/92)

प्रतिनिधि और प्रतिदान अर्थ में प्रति कर्मप्रवचनीय-संज्ञक हो। प्रतिनिधि और प्रतिदान अर्थ में कर्मप्रवचनीय के योग में पंचमी हो। जैसे- प्रद्युम्नः कृष्णात् प्रति (प्रद्युम्न कृष्ण के प्रतिनिधि हैं)- यहाँ प्रतिनिधि अर्थ में 'प्रति' की 'प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः' से कर्म-~~प्रवच~~ प्रवचनीय संज्ञा तथा इसके योग में 'प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्' से 'कृष्ण' में पंचमी हुई। तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषात् (तिलों से उड़द बदलता है) - यहाँ प्रतिदान के अर्थ में कर्मप्रवचनीय संज्ञा तथा उसके योग में 'तिल' शब्द में पंचमी हुई।